संजय की कलम से ..

त्रिमूर्ति शिव जयन्ती का आध्यात्मिक रहस्य

ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता, निराकार स्वयंभू, सर्वशक्तिमान्, ज्ञानसागर, पतित-पावन, परमप्रिय, परमपूज्य परमपिता परमात्मा शिव का दिव्य जन्म मानव मात्र के कल्याणार्थ होता है। अत: 'शिव' शब्द ही कल्याण का वाचक हो गया है। सर्व आत्माओं का सदा कल्याण करने के कारण वे 'सदाशिव' कहे जाते हैं। उनका दिव्य-जन्मोत्सव ही हीरे-तुल्य है। अत: यह आवश्यक है कि इस महापर्व महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्यों पर प्रकाश डाला जाये।

शिवरात्रि 'रात्रि' में क्यों?

अन्य सभी जयन्तियाँ दिन में मनाते हैं लेकिन निराकार परमात्मा शिव की जयन्ती रात्रि में मनाते हैं। वह भी फाल्गुन में कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में, जबकि घटाटोप अन्धकार छाया होता है। वस्तुत: ज्ञानसूर्य, पतित-पावन परमात्मा शिव का अवतरण धर्मग्लानि के समय होता है जब चतुर्दिक् घोर अज्ञान-अन्धकार छाया रहता है तथा विकारों के वशीभूत होकर मनुष्य दु:खी एवं अशान्त हो उठते हैं तब ज्ञानसागर परमात्मा शिव आकर ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं जिससे रचयिता तथा रचना के आदि-मध्य-अन्त का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर मनुष्य इस जीवन में अतीन्द्रिय आनन्द की तथा भविष्य में नर से श्री नारायण और नारी से श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति करते हैं।

शिव पर अक और धतूरा

अन्य देवताओं पर तो कमल, गुलाब या अन्य सुगन्धित पुष्प चढ़ाते हैं लेकिन पतित-पावन परमात्मा शिव पर अक, धतूरे का रंग व गन्धहीन पुष्प चढ़ाते हैं। क्या आपने कभी विचार किया है कि ऐसा क्यों? वास्तव में जब पतित-पावन परमात्मा शिव पतित, तमोप्रधान, कलियुगी, आसुरी सृष्टि पर पावन, सतोप्रधान, सतयुगी दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना के लिए अवतरित होते हैं तो सभी जीवात्माओं से काम-क्रोधादि पंच विकारों का दान मांगते हैं। जो नर-नारी, जीवन में दु:ख-अशान्ति पैदा करने वाले पंच विकारों को परमात्मा शिव पर चढ़ा देते हैं, वे निर्विकारी बन पावन, सतयुगी दैवी स्वराज्य के अधिकारी बनते हैं। इसी की स्मृति में भक्ति मार्ग में परमात्मा शिव पर अक-धतूरे का फूल चढ़ाते हैं।

पौराणिक कथा भी है कि भगवान शिव ने मानवता के रक्षार्थ विष-पान किया था। 'काम विकार' ही तो वह विष है जिसने मानवमात्र को काला, तमोप्रधान बना दिया है। सारे कुकर्मों

अमृत-सूची

- राजयोग से स्वभाव परिवर्तन *(सम्पादकीय)* 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी.....8
- ईश्वरीय कारोबार में 10
- 'पत्र' संपादक के नाम 13
- भाई-बहनों के प्रश्न.....14
- शिवपिता ने जीवन 15
- प्रेम के सागर का प्रेम 16
- जब मरते-मरते बाबा ने.....17
- पल भर के प्यार ने.....18
- बेहद की वैराग वृत्ति.....19
- पहला सुख निरोगी काया.....20
- बाबा ने आबाद कर दिया 22
- तारा है तू गगन का *(कविता)* 23
- शक्ति निकेतन के फरिश्ते ...24
- शिवबाबा से बात.....26
- सचित्र सेवा समाचार 27
- मिल गई मंज़िल मुझे 28
- सचित्र सेवा समाचार 30
- जेल में मिली नई राह.....32
- मेरे सुहाने बाबा *(कविता)* 33
- राजयोग से मन की शान्ति....33
- जब सोये खुले आसमान.....34

सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत		
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

की यही जड़ है। अति कामुकता ने आज जनसंख्या-विस्फोट की समस्या उत्पन्न कर दी है। वस्तुत: काम की विषैली ज्वाला में जलकर ही यह सृष्टि स्वर्ग से नर्क में, अमरलोक से मृत्युलोक में बदल जाती है। श्रीमद्भगवद्गीता की शब्दावली में 'काम-क्रोध नर्क के द्वार' हैं। कहते भी हैं कि ब्रह्मचर्य के बल से देवताओं ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी। कामारि तो परमात्मा शिव ही हैं जिन्होंने तीसरा नेत्र खोलकर काम को भस्म किया था। कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर जब ज्ञानसागर, पतित पावन, निराकार परमात्मा शिव अवतरित होते हैं तो प्राय:लोप गीता-ज्ञान की शिक्षा देकर मनुष्यात्माओं का तृतीय नेत्र खोलते हैं जिसकी प्रखर ज्वाला में कामादि विकार जलकर भस्म हो जाते हैं। फिर आधा कल्प अर्थात् सतयुग-त्रेता में इन विकारों का नाम-निशान भी नहीं रहता। शास्त्र भी कहते हैं कि द्वापर में कामदेव का पुनर्जन्म हुआ था।

शिव की सवारी

परमपिता परमात्मा शिव के साथ एक नन्दीगण भी दिखाते हैं। कहते हैं कि उनकी सवारी बैल है। इसका भी लाक्षणिक अर्थ है। परमात्मा अजन्मे हैं। उनका जन्म माँ के गर्भ से नहीं होता। विश्व-पिता का कोई पिता नहीं हो सकता। उनका जन्म दिव्य और अलौकिक होता है। वे स्वयंभू हैं। कलियुग के अन्त में धर्मस्थापनार्थ स्वयंभू निराकार परमात्मा शिव का अवतरण होता है अर्थात् वे एक साकार, साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं। परमात्मा के दिव्य प्रवेश के पश्चात् उनका नाम पड़ता है 'प्रजापिता ब्रह्मा'। निराकार परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा प्राय:लोप गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर मनुष्यात्माओं को तमोप्रधान से सतोप्रधान बना, सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि की पुनर्स्थापना करते हैं। इसलिए परमात्मा के साथ ब्रह्मा को भी स्थापना के निमित्त माना जाता है तथा शिव के साथ ब्रह्मा के प्रतीक नन्दीगण की प्रतिमा भी स्थापित की जाती है।

शिवलिंग पर अंकित तीन रेखाओं तथा तीन पत्तों वाले बेलपत्र का रहस्य

शिवलिंग पर सदा तीन रेखायें अंकित करते हैं और तीन पत्तों वाला बेलपत्र भी चढ़ाते हैं। वस्तुत: परमात्मा शिव त्रिमूर्ति हैं अर्थात् ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के भी रचयिता हैं। वे करन-करावनहार हैं। ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना कराते हैं, शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं तथा विष्णु द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की पालना कराते हैं। जब परमात्मा का अवतरण होता है तब ही इन तीन देवताओं का कार्य भी सूक्ष्मलोक में आरम्भ हो जाता है। अत: शिव जयन्ती ही ब्रह्मा-विष्णु-शंकर जयन्ती है तथा गीता-जयन्ती भी है क्योंकि अवतरण के साथ ही परमात्मा शिव गीता-ज्ञान सुनाने लगते हैं।

शिव-विवाह के बारे में वास्तविकता

बहुत-से लोग शिवरात्रि को शिव-विवाह की रात्रि मानते हैं। इसका भी आध्यात्मिक रहस्य है। निराकार परमात्मा शिव का विवाह कैसे? यहाँ यह स्पष्ट समझ लेना आवश्यक है कि शिव और शंकर दो हैं। ज्योति-बिन्दु ज्ञान-सिन्धु निराकार परमपिता

परमात्मा शिव ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता हैं। शंकर सूक्ष्मलोक के निवासी एक आकारी देवता हैं जो कि कलियुगी सृष्टि के महाविनाश के निमित्त बनते हैं। शंकर को सदा तपस्वी रूप में दिखाते हैं। अवश्य इनके ऊपर कोई हैं जिनकी ये तपस्या करते हैं। निराकार परमात्मा शिव की शक्ति से ही ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर स्थापना, पालना और विनाश का कर्त्तव्य करते हैं। सर्वशक्तिमान् परमात्मा शिव के विवाह का तो प्रश्न ही नहीं उठता। वे एक हैं और निराकार हैं। हाँ, आध्यात्मिक भाषा में जब भी आत्मा रूपी सजनियाँ जन्म-मरण के चक्र में आते-आते शिव साजन से विमुख होकर घोर दुखी और अशान्त हो जाती हैं तब स्वयंभू, अजन्मे परमात्मा शिव, प्रजापिता ब्रह्मा के साकार साधारण वृद्ध तन में दिव्य प्रवेश करते हैं और आत्मा रूपी पार्वतियों को अमरकथा सुनाकर सतयुगी अमरलोक के वासी बनाते हैं जहाँ मृत्यु का भय नहीं होता, कलह-क्लेश का नाम-निशान नहीं रहता तथा सम्पूर्ण पवित्रता-सुख-शान्ति का अटल, अखण्ड साम्राज्य होता है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर भूली-भटकी आत्माओं का परम प्रियतम परमात्मा शिव से मंगल-मिलन ही शिव-विवाह है। अत: भगवान शिव का दिव्य-जन्मोत्सव ही उनका आध्यात्मिक विवाहोत्सव भी है।

वर्तमान काल में
परमपिता शिव का अवतरण

अब पुन: धर्म की अति ग्लानि हो चुकी है तथा तमोप्रधानता चरम सीमा पर पहुँच चुकी है। सर्वत्र घोर अज्ञान-अन्धकार फैला हुआ है। घोर कलिकाल की ऐसी काली रात्रि में सतयुगी दिन का प्रकाश फैलाने के लिए ज्ञानसूर्य, पतित-पावन परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के साकार, साधारण, वृद्ध तन में पुन: अवतरित हो चुके हैं और इस वर्ष हम उनके दिव्य अवतरण की प्रतीक, 78वीं शिव जयन्ती मना रहे हैं। आप सभी जन्म-जन्मान्तर से पुकारते आये हैं कि हे पतित-पावन परमात्मा, आकर हमें पावन बनाओ। आपकी पुकार पर विश्वपिता परमात्मा इस पृथ्वी पर मेहमान बनकर आये हैं और कहते हैं, 'मीठे बच्चो! मुझे काम, क्रोधादि पांच विकारों का दान दे दो तो तुम पावन, सतोप्रधान बन नर से श्री नारायण तथा नारी से श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति कर लोगे। शिवरात्रि पर भक्तजन व्रत करते हैं तथा रात्रि का जागरण भी करते हैं। वस्तुत: पाँच विकारों के वशीभूत न होने का व्रत ही सच्चा व्रत है और माया की मादक किन्तु दुखद नींद से जागरण ही सच्चा जागरण है। ज्ञानसागर परमात्मा हमें प्राय:लोप गीता-ज्ञान सुनाकर 'पर' धर्म अर्थात् शरीर के धर्म से ऊपर उठा, स्वधर्म अर्थात् आत्मा के धर्म में टिका रहे हैं। अत: आइये अब हम ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा पाँच विकारों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर 'स्वधर्म' में टिकने अर्थात् आत्माभिमानी बनने का सच्चा व्रत लें और आनन्द सागर निराकार परमात्मा शिव की आनन्ददायिनी स्मृति में रह उस अनुपम, अलौकिक, अतीन्द्रिय आनन्द की प्राप्ति करें जिसके लिए गोप-गोपियों का इतना गायन है।

निराकार आत्मा का निराकार परमात्मा से आनन्ददायक मंगल-मिलन ही सच्चा शिव-विवाह है। इस मंगल-मिलन से हम जीवनमुक्त बन जाते हैं और गृहस्थ जीवन आश्रम बन जाता है जहाँ हम कमल पुष्प सदृश्य अनासक्त हो अपना कर्त्तव्य करते हुए निवास करते हैं। इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर जिसने यह मंगल-मिलन नहीं मनाया वह पश्चाताप करेगा कि हे पतित-पावन परमात्मा, आप आये और हमें पावन बनने का आदेश दिया लेकिन हम अभागे आपके आदेश पर चल अपने जीवन को कृतार्थ न कर सके। अत: मानवमात्र का यह परम कर्त्तव्य है कि वे 78वीं शिव जयन्ती के इस पावनतम् अवसर पर सुखदाता, दुखहर्ता परमात्मा शिव पर, जीवन में दुख-अशान्ति पैदा करने वाले पंच विकार रूपी अक-धतूरे अर्पण कर दें और निर्विकारी बन पावन सतयुगी दैवी सृष्टि की पुनर्स्थापना के ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनें। ❖

राजयोग से स्वभाव परिवर्तन

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में अधिकतर व्यक्ति यह सोचते हैं कि हमने अगले 40-50 वर्षों तक के खर्च के लिए धन का काफी प्रबन्ध कर लिया है इसलिए हम निश्चिंत हैं। शादी, बीमारी, मकान...आदि सब प्रकार के खर्चों को ध्यान में रखकर वे अधिक से अधिक धन का प्रबन्ध करते हैं। परन्तु क्या अकेले धन की बहुलता से जीवन में निश्चिन्तता आ सकती है? यदि बच्चे गलत चलन चल गए और व्यसनों में उलझ गए तो, किसी ने धोखा, हेराफेरी करके जमीन-जायदाद पर कब्जा कर लिया तो, मित्रों ने किसी कमज़ोरी का गलत फायदा उठाया तो, बेटे-बहू की तनातनी हुई तो.... ये कितनी ही प्रकार की समस्याएँ हैं जो धन से नहीं सुलझतीं बल्कि सूझ, समझ और आत्मबल मांगती हैं। धन तो उधार भी मिल सकता है पर सूझ, समझ और आत्मबल तो उधार भी नहीं मिलते। यदि अपनी समस्याओं के हल के लिए किसी अन्य से राय मांगते हैं तो घर की बात के बाहर चले जाने और निन्दा होने का भय भी सताता है। यदि मन में दबाए रखते हैं तो मायूसी, मजबूरी, आवेश, आक्रोश के मिले-जुले भँवर में फँसे रहते हैं। फिर ना काम करने का उमंग रहता है, न जीने की आशा, हारे हुए योद्धा की तरह मुँह छिपाए रखने की मानसिकता बन जाती है।

आध्यात्मिक ज्ञान है अदृश्य कमाई

धन एकत्रित करना जीवन की एक नितान्त महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है परन्तु परिस्थिति आने पर कमाया हुआ धन भी हमारा साथ नहीं देता है। उसे बहुत सम्भाला, सहेजा था पर इस आड़े वक्त में वह काम नहीं आ रहा है इसलिए धन के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान का बल अपने में भरना भी बहुत ही जरूरी है। जैसे धन एक दिन में नहीं कमाया जा सकता, उसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान को भी प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा सीखना अर्थात् विचारों में समाना होता है। जैसे ज़रूरत के समय हम नोटों की गड्डी में से कोई भी नोट निकालकर काम चला लेते हैं ऐसे ही ज़रूरत के समय, अपने भीतर जमा ज्ञान की किसी भी अनुकूल बात का प्रयोग कर हम अपना मार्ग निकाल सकते हैं इसलिए धन जमा करने की तरह ही प्रतिदिन आध्यात्मिक ज्ञान रूपी सच्ची, तुरंत फल देने वाली पर अदृश्य कमाई जमा करना भी ज़रूरी है।

जड़ तत्वों से भिन्न है आत्मा

आध्यात्मिक ज्ञान का अर्थ है आत्मा का अध्ययन। जैसे शरीर का अध्ययन करते हैं, इसी प्रकार आध्यात्मिकता हमें आत्मा, परमात्मा, कर्मगति आदि का ज्ञान कराती है। अगर कोई हमसे हमारा परिचय पूछे तो हम शरीर का नाम, धाम, काम, शरीर की जन्मतिथि, शरीर का वजन, शरीर की लम्बाई आदि बता देते हैं पर क्या हम सचमुच शरीर हैं? शरीर तो पाँच भिन्न-भिन्न तत्वों से मिलकर बना है तो हम इन पांचों में से कौन-सा तत्व हैं। हम अग्नि हैं, जल हैं, वायु हैं, पृथ्वी हैं या आकाश हैं। स्पष्ट है कि हम इनमें से कोई भी तत्व नहीं हैं, ना ही पांचों का मिला-जुला रूप हैं। शरीर तत्वों से अवश्य बना है पर हम तत्वों से भिन्न हैं। हम चेतन हैं अर्थात् आत्मा हैं। तत्वों से बने शरीर को चलाने वाले हैं। जड़ शरीर की हर गतिविधि का आधार हम चेतन आत्मा ही हैं।

जरूरी है आत्मा की सीट की सुरक्षा

आत्मा मन-बुद्धि-संस्कार से युक्त है। जड़ शरीर से कार्य करवाने वाली है। आत्मा भ्रकुटि के मध्य में विराजमान है तथा शरीर और इंद्रियों

की राजा है। यही कारण है कि राजा के स्थित होने का मस्तिष्कीय विभाग शरीर में सर्वोपरि महत्व का है। यूँ तो किले की हर ईंट महत्वपूर्ण होती है परंतु किले के जिस भाग में राजा और उसका दरबार होता है, उस क्षेत्र के लिए खास कानून-कायदे और सुरक्षा व्यवस्था होती है। स्कूटर-गाड़ी चलाने वालों के लिए हेलमेट या बेल्ट पहनने का नियम भी आत्मा की सीट की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

मोबाइल की तरह आत्मा को भी चार्ज करना ज़रूरी

हम प्रतिदिन मोबाइल का प्रयोग करते हैं। प्रयोग करने से इसकी बैटरी डिस्चार्ज होती है, उसे पुन: चार्जर द्वारा चार्ज करना पड़ता है। मान लीजिए, हम मोबाइल का स्वर्ण निर्मित कवर बनवा लें जिसकी कीमत लाखों में हो। ऐसे कवर वाला मोबाइल सुन्दर तो बहुत लगेगा, पर इससे उसकी चार्जिंग भी हो जाए, यह नहीं होगा। चार्जिंग के लिए उसका कनेक्शन लाइट से जोड़ना ही पड़ेगा। मोबाइल की तरह ही हम अपने शरीर को खूब महंगा लिबास और गहने पहना लें तो क्या इससे आत्मा शक्तिशाली बन जाएगी? नहीं ना। गहने-कपड़े शरीर को आकर्षक बना देंगे पर आत्मा को शक्तिशाली, सुन्दर, तेजस्वी बनाने के लिए उसका कनेक्शन भी सर्वोच्च प्रकाश परमात्मा पिता से जोड़ना अनिवार्य है। जैसे आत्मा प्रकाश का एक सूक्ष्म बिन्दु है, उसी प्रकार परमात्मा पिता भी प्रकाश के एक सूक्ष्म दिव्य बिन्दु ही हैं। बिन्दु होते हुए भी वे सर्वगुणों और सर्व शक्तियों के सिन्धु हैं। उनके एक-एक गुण की गहराई में जाने से अनेक नवीन अनुभव-रत्न प्राप्त होते हैं।

राजयोग से विकर्म रूपी मैल का नाश

परमात्मा से जुड़कर आत्मा में दिव्य करंट भरता है जिससे उसकी स्वभावगत कमी, कमज़ोरियाँ मिट जाती हैं और परमात्मा पिता के समान ही प्रेम, शान्ति, निरहंकारिता आदि गुण उस में आ जाते हैं। सौर ऊर्जा हो या अन्य कोई ऊर्जा, वह ठण्डे को गर्म कर देती है, गर्म को ठण्डा कर देती है, ऊपर की चीज़ को नीचे उतार देती है, नीचे की चीज़ को ऊपर चढ़ा देती है, तेज चलते को रोक देती है, रुकी हुई को चला देती है, इस प्रकार परिवर्तन करती है। परमात्मा की शक्ति फिर मनुष्यों के स्वभाव में परिवर्तन लाती है। कोई ठण्डा, आलसी, अकर्मण्य हो उसे उमंगवान, कर्मठ बना देती है, कोई हाइपर एक्टिव हो उसकी कर्मेन्द्रियों को स्थिर कर देती है। कोई निराशा के अन्धकार में भटक रहा हो, जीने का उत्साह खो चुका हो उसे आशा की किरण और जीने का उत्साह प्रदान करती है। विकारों से हारे हुए को विकार-जीत बना देती है। मैले कपड़े को साबुन और पानी के घोल में डाल दिया जाए तो मैल खत्म हो जाता है। इसी प्रकार, आत्मा को भी पिछले 63 जन्मों से विकृत स्वभाव रूपी मैल लगा है। मन-बुद्धि से ज्ञान-सूर्य भगवान के समक्ष जाते ही वह विकर्म रूपी मैल उतर जाता है और आत्मा उज्ज्वल हो जाती है।

चीजों का नहीं, मनुष्यों का सुधार

मनुष्य प्राकृतिक तत्वों से छेड़-छाड़ करके, भोजन, कपड़े, मकान, संचार, यातायात तथा रहन-सहन के साधनों में परिवर्तन करके अपनी रीति से सुधार की ओर बढ़ रहे हैं। वे मानव के अलावा अन्य चीज़ो में सुधार करते हैं। इससे चीज़ें तो अच्छी बन जाती हैं परन्तु मानव तो बिगड़ता ही चला जाता है। वह बिगड़ा हुआ मानव भला दुनिया को सुधरने कैसे देगा। भगवान पहले मनुष्यों को सुधारते हैं। सुधरा हुआ मनुष्य ही सुधरी हुई दुनिया का निर्माण कर सकता है। सुधरी हुई दुनिया अर्थात् कमल समान अलिप्त इंद्रियों वाले देवी-देवताओं की दुनिया।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश